इकाई 5 भाषिक कला के विभिन्न पक्ष

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य
5.1 प्रस्तावना
5.2 भाषा : सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम
5.3 भाषा के विभिन्न रूप
  5.3.1 लिखित भाषा
  5.3.2 मौखिक भाषा
  5.3.3 आंगिक भाषा
5.4 भाषा के उपयोग
5.5 भाषा का व्यावहारिक पक्ष
  5.5.1 वक्ता
  5.5.2 श्रोता
  5.5.3 कथन
  5.5.4 उद्देश्य
  5.5.5 स्थिति
  5.5.6 समय
5.6 सारांश
5.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस इकाई में भाषिक कला के विभिन्न पक्षों पर विचार किया गया है। इसे पढ़ने के बाद आप :

- जान सकेंगे कि भाषा सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम है,
- भाषा के विभिन्न रूपों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे; और
- भाषा के व्यावहारिक पक्ष से जुड़े प्रमुख मुद्दों को समझ सकेंगे।

5.1 प्रस्तावना

भाषा मूलतः एक व्यवहार है। व्यवहार में कौशल जरूरी है। अतः भाषा में विभिन्न गुणों (कौशल) का होना अनिवार्य है। प्रस्तुत इकाई के अन्तर्गत हमारा सीधा सम्बन्ध सम्प्रेषण से है अतः हमें यह देखना होगा कि सम्प्रेषण के दौरान प्रयुक्त भाषा में किन गुणों का होना आवश्यक है। इस सन्दर्भ में हम भाषा के जिन गुणों की चर्चा करेंगे उन्हें 'भाषिक कला' के रूप से प्रस्तुत किया जाएगा।

अभी तक पूर्व की इकाइयों में आप बराबर देखते आ रहे हैं कि सम्प्रेषण है क्या और मुझे विश्वास है कि अब तक आपको पूरी तरह स्पष्ट हो गया है कि सम्प्रेषण शब्द का शाब्दिक और सरलतम अर्थ है - एक व्यक्ति या एक स्थान से दूसरे व्यक्ति या दूसरे स्थान तक विचारों अथवा सूचनाओं को पहुँचाना। सम्प्रेषण से अभिप्राय है किसी बात (विचार अथवा भाव) को उचित तरीके से प्रेषित करना। यदि इसे सामान्य रूप में व्याख्यायित करें तो कहा जा सकता है कि दो पक्षों के बीच कथ्य या संदेश का विनिमय इस प्रकार किया जाए कि दोनों उसे समान रूप से समझ सकें। किन्तु भाषायी सम्प्रेषण के अन्तर्गत केवल विचार विनिमय की ही बात नहीं है। यहाँ (साहित्यिक/भाषिक सन्दर्भों में) कृतिकार अथवा वक्ता अपनी कृति द्वारा अथवा भाषिक प्रयोग द्वारा पाठक अथवा श्रोता को अपने विचारों से प्रभावित भी करता है।

5.2 भाषा : सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम

भाषा सम्प्रेषण का मूल आधार है। इसे यों भी कह सकते हैं कि भाषा वह साधन है जिसके द्वारा विचार और अनुभूति का सम्प्रेषण होता है। भाषा एक सामाजिक प्रक्रिया है। समाज में व्यक्ति और व्यक्ति तथा व्यक्ति और समाज के बीच आदान-प्रदान का साधन भाषा है। 'भाषा' शब्द 'भाष्' धातु से बना है

जिसका आशय है 'व्यक्त वाणी में कुछ कहना'। यहाँ ध्यान रखने की बात यह है कि वाणी निरर्थक भी हो सकती है अतः 'भाषा' से अभिप्राय अर्थमयता और अभिव्यंजकता से ही लेना चाहिए। मनुष्य-मनुष्य के बीच किसी भी वस्तु के विषय में अपने विचारों, इच्छाओं और मन्तव्यों के आदान-प्रदान हेतु सार्थक और क्रमिक व्यवस्था के रूप में व्यक्त ध्वनि-संकेतों का जो व्यवहार होता है, वही भाषा है।

शब्द और अर्थ शाश्वत रूप से परस्पर सम्बद्ध हैं। शब्द और अर्थ में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। भाषा का प्रयोग और व्यवहार द्वारा अर्जन होता है। भाषा सतत विकासमान होती है। भाषा का विकास न हो तो वह भाषा जड़ हो जाती है। जिस भाषा का प्रयोग जनता करती है उसमें लगातार नए शब्द जुड़ते जाते हैं। वस्तुतः सामाजिक आदान-प्रदान से भाषा में जीवंतता बनी रहती है। पुस्तकों में सिमटी भाषा पढ़े-लिखे और शिष्ट जनों की भाषा बन जाती है और वह रूढ़ और बद्ध हो जाती है। उसमें विकास की संभावनाएँ कम हो जाती हैं। समाज में भाषा के लगातार प्रयोग होने से उसमें नई अर्थवत्ता आती है, उसमें नए मुहावरे, शब्द और शैलियाँ जुड़ती रहती हैं। कहने का तात्पर्य यह कि बदलाव भाषा की मूल प्रकृति है। इसी कारण भाषा में विविधता भी पाई जाती है। भाषा विविधता भाषा के विकास के लिए अनिवार्य और जीवंत भाषा के लिए अपरिहार्य है।

5.3 भाषा के विभिन्न रूप

ध्वनि, शब्द, वाक्य और अर्थ भाषा के चार प्रमुख अंग हैं। इन्हीं अंगों के आधार पर भाषा का रूप स्थायित्व पाता है। भाषा का यही रूप आगे चलकर हमारे सामने दो रूपों में आता है - लिखित भाषा और उच्चरित अथवा मौखिक भाषा। मेरे विचार में यहाँ आपको यह बताना अप्रासंगिक न होगा कि लिखित और मौखिक दोनों की प्रकार की भाषाओं की अपनी-अपनी कुछ विशेषताएँ होती हैं।

5.3.1 लिखित भाषा

लिखित भाषा में तीन गुण पाए जाते हैं - प्रसाद, ओज और माधुर्य।'प्रसाद' का शाब्दिक अर्थ है प्रसन्नता। प्रसाद गुण वहाँ होता है जहाँ सरल, सहज और भावव्यंजक शब्दावली का प्रयोग हो। अर्थ की निर्मलता और सहज प्रतीति इसकी विशेषता है। जैसे -

वह आता
दो टूक कलेजे के करता,
पछताता पथ पर आता
पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक
मुट्ठी भर दाने को, भूख मिटाने को
मुख फटी पुरानी झोली का फैलाता
वह आता।

(निराला)

ओज का शाब्दिक अर्थ है - तेजस्विता। साहित्य में ओज गुण वहाँ होता है जहाँ ऐसी शब्दावली का प्रयोग हो जिसे पढ़ते ही मन में उत्साह, उत्तेजना या ओजस्विता उत्पन्न हो जाए। ओज गुण का सम्बन्ध मन की तीव्रतम भावनाओं (वीर/रौद्र) से होता है। ऐसे स्थलों पर भाषा में उदात्त भाव तथा कर्कश और क्लिष्ट शब्द-संघटन का प्रयोग होता है जैसे -

छीनता हो स्वत्व कोई
और तू त्याग तप से काम ले
यह पाप है
पुण्य है
विच्छिन्न कर देना उसे
बढ़ रहा तेरी तरफ जो हाथ है।

(द्विनकर)

माधुर्य का अर्थ है 'मिठास'। माधुर्य युक्त रचना को पढ़ने से मन में आनन्द का भाव उत्पन्न होता है। आनन्द का यह भाव पाठक के मन को द्रवित कर देता है। सीधे-सीधे कहा जा सकता है कि जो गुण अन्तःकरण को द्रवित करे, उसे प्रसन्न करे, वह माधुर्य गुण कहलाता है। इसके सन्दर्भ में शृंगार, करुण अथवा शान्ति के प्रसंगों में सन्निहित होते हैं जैसे -

तुम कनक किरण के अन्तराल में,
लुक छिपकर चलते हो क्यों?
नत मस्तक गर्व सहन करते
यौवन के घन, रस-कन झरते।
हे लाज भर सौन्दर्य, बता दो
मौन बने रहते हो क्यों?

(प्रसाद)

5.3.2 मौखिक भाषा

जब हम 'भाषा' शब्द का प्रयोग करते हैं तो इससे हमारा अभिप्राय बड़ा व्यापक होता है। इसके अन्तर्गत उच्चारण, ग्रहण और बोध ये सभी प्रक्रियाएँ अन्तर्निहित रहती हैं। इस सन्दर्भ में भाषा केन्द्रीय तत्व के रूप में रहती है और यह वक्ता श्रोता से सीधे-सीधे जुड़ी रहती है एवं इसी के माध्यम से भावाभिव्यक्ति भी होती है। वक्ता भाषा ही बोलता है, श्रोता भाषा ही सुनता है और सुनकर भाषा के माध्यम से ही भाव ग्रहण करता है।

इसे इस रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है -

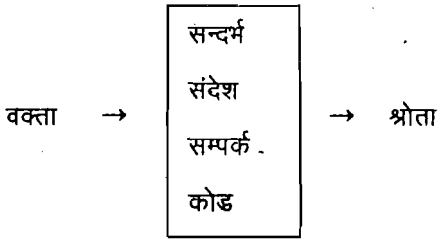

यदि इस तथ्य पर गम्भीरता से विचार किया जाए तो हमें भाषा के दो रूप प्राप्त होते हैं। (1) स्थाई एवं सूक्ष्म रूप, (2) अस्थाई एवं स्थूल रूप। स्थाई रूप को भाषा एवं अस्थाई रूप को वाक् (वाणी) कहा जाता है। भाषा की सत्ता सूक्ष्म और भाव परक है जबकि वाक् की सत्ता स्थूल और भौतिक है। भाषा स्थाई है और वाक् अस्थायी। हम जो कुछ भी बोलते अथवा सुनते हैं, वह वाक् है। हम सुनकर जो जानते हैं, वह भाषा है। हमारा भाषिक आदान-प्रदान (बोलना-सुनना) वाक् के क्षेत्र में ही आता है। इससे जिस तत्व का बोध या ज्ञान होता है, वह भाषा का वास्तविक रूप है। अर्थात -

उच्चारण - वाक्
अभिप्राय की प्राप्ति (ज्ञान) - भाषा

और इसे स्पष्ट करने के लिए इस प्रकार भी प्रस्तुत किया जा सकता है -

बिट्टू - तुम्हें अब पढ़ाई करनी चाहिए शिवा।
शिवा - कर तो रही हूँ दीदी;
बिट्टू - पर उतनी नहीं जितनी तुम्हें करनी चाहिए।
शिवा - तुम तो हमेशा ऐसे ही कहती रहती हो दीदी।
बिट्टू - (खीझते हुए) मैं ऐसे ही क्यों कहूँगी? यदि तुम्हें समझ में आता है कि तुम्हारी इतनी ही पढ़ाई मेडिकल के लिए पर्याप्त है तो ठीक है, मुझे क्या?
शिवा - ठीक है दीदी। (और सोचते हुए जाकर पढ़ने की मेज पर बैठ जाती हैं)

समाज में भाषा दो रूपों में हमारे सामने आती है - मौखिक भाषा और लिखित भाषा। प्रायः लोग इतना ही सोचकर संतुष्ट हो जाते हैं कि जब मुख से कुछ बोलते हैं तो वह मौखिक भाषा होती है और जब उसे लिपिबद्ध कर देते हैं तो वह लिखित भाषा हो जाती है। सामान्य रूप से भाषा का लिखित रूप ही ज्यादा महत्वपूर्ण भी माना जाता है किन्तु हम भाषिक सन्दर्भों में इन्हें देखते हैं तो भाषा का उच्चरित रूप ही उसका वास्तविक रूप लगता है, लिखित नहीं। भाषा के उच्चरित रूप का महत्व समाज में इसके प्रयोग सन्दर्भों से स्वयं सिद्ध है। लेखन-क्रिया भाषा नहीं है वरन् यह तो भाषा का केवल एक प्रकार है जिसके द्वारा भाषा का अस्तित्व सृष्टि के आदि काल से ही मिलता है जबकि लिखित रूप बहुत बाद का है और आज भी अनेक स्थानों पर भाषा का उच्चरित रूप ही मिलता है। संसार में अनेक ऐसी भाषाएँ विद्यमान हैं आज भी जिनका लिखित रूप नहीं मिलता है। समाज का प्रत्येक सदस्य चाहे वह लिखना-पढ़ना जानता हो अथवा नहीं पर बोलना अवश्य जानता है।

भाषा के उच्चरित रूप का मानव मन पर प्रभाव पड़ता है। कई बार वह मानव मन को झकझोर देता है। भाषा के उच्चरित रूप द्वारा किसी के हृदय में करुणा, दया, सहृदयता, मैत्री अथवा व्यंग्य और क्रोध आदि के भाव जगाना सहज ही सम्भव है। लिंखित भाषा में इन सन्दर्भों से जुड़ी हुई बातें पढ़ने पर भी पाठक के मन में इतनी मात्रा में भावनाओं की व्याप्ति नहीं होती है जितनी भाषा के उच्चरित रूप (वाक्) द्वारा। इस बात को नाटक से जोड़कर और भी स्पष्ट किया जा सकता है। किसी भी नाट्यकृति के दो रूप होते हैं - एक उसका लिखा हुआ रूप, दूसरा उसका मंचित रूप। यद्यपि नाटक को लिखित रूप में बहुत से लोग पढ़ने हैं परन्तु सोचने की बात यह है कि क्या नाटक पढ़े जाने पर उतनी मात्रा में भाव सम्प्रेषित कर पाता है जितना मंच पर नाटक के मंचन के समय दृश्य और श्रव्य दोनों के माध्यम से सम्प्रेषण हो पाता है। सच्चे अर्थों में यदि देखा जाए तो नाटक में शब्द का कोई अर्थ नहीं होता है वरन् शब्द का अभिनय के समय किया गया उच्चारण ही सब कुछ होता है। इस सन्दर्भ में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटक 'अन्धेर नगरी' को विद्यार्थियों को पढ़ने सलाह दूँगा। जब विद्यार्थी इस नाटक को स्वयं पढ़ लें तो फिर कई विद्यार्थी मिलकर एक-एक पात्र के कथोपथनों को पढ़ें। अब वे हंसते-हंसते लोट-पोट हो जाएंगे। हंसे तो वे पहले भी थे पर इतना नहीं जितना की अब। इस बात को कहने का अभिप्राय केवल इतना ही है कि उच्चरित भाषा सम्प्रेषण कला की दृष्टि से जितनी समर्थ है, लिखित भाषा उतनी नहीं।

5.3.3 आंगिक भाषा

भाषा का लिखित रूप हृदयस्थ किसी भी भाव को उतनी सम्पूर्णता के साथ नहीं प्रस्तुत कर पाता है जितना उच्चरित रूप। उदाहरण के लिए **'अच्छा'** लिखने से केवल **'अच्छा'** (विशेषण रूप) ही प्रतीत होता है किन्तु यदि इसी **'अच्छा'** के उच्चरित रूप से कई-कई भावों की अभिव्यक्ति सहज सम्भव होती है। मुख की भाव-भंगिमा, बलाघात, स्वराघात, मात्रा आदि अनेक तत्वों का उपयोग उच्चरित रूप में किया जाता है। लिखित वाक्यों में हम अनेक प्रकार के चिन्हों के प्रयोग द्वारा और कहीं कोष्ठक में संकेतों के द्वारा (जैसे - चौंककर, देखते हुए, झुककर आदि) इन भाव-भंगिमाओं की अभिव्यक्ति में सक्षम नहीं हो पाते हैं। लिखते समय व्याकरण का अंकुश हमेशा हमारे सिर पर सवार रहता है। व्याकरण का यही भय कई बार भाषा के वास्तविक रूप को सामने नहीं आने देता है। वस्तुतः यदि देखा जाए तो भाषा का लिखित रूप एक सरोवर (तालाब) का बंधा हुआ रूप है और उच्चरित रूप सतत् प्रवाहमान सरिता है। तालाब का बंधा हुआ पानी कालान्तर में तमाम प्रकार की गन्दगियों से युक्त हो सकता है परन्तु सतत् प्रवाहमान सरिता का जल अपने में गन्दगियों को समेटने पर भी अपने प्रवाह के कारण शुद्ध और निर्मल होता रहता है।

5.4 भाषा के उपयोग

भाषा बड़ी बलवान होती है। अतः इसका उपयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिए। भाषा निर्माण भी कर सकती है और विध्वंस भी। असल में, भाषा का उपयोग कई उद्देश्य से किया जाता है या हम यह भी कह सकते हैं कि भाषा के कई उपयोग हैं - (1) सूचित करना, (2) आग्रह करना, (3) मनोरंजन करना, (4) संबंध विच्छेद करना, (5) पूरक के रूप में कार्य करना तथा (6) छिपाना।

सूचना देना भाषा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य है। हम रोज अपने अनुभवों, विचारों, संवेदनाओं, विश्वासों, मूल्यों आदि के बारे में एक दूसरे को सूचित करते हैं। नीचे दिए गए उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जाएगी -

रमेश (सुरेश से) - क्या तुम इस व्यक्ति को जानते हो?
सुरेश - हाँ। जानता हूँ। उसका नाम सोहन है, वह मेरे साथ पढ़ता है।

उपर्युक्त वाक्य एक प्रश्नवाचक वाक्य है। ज्ञान की दृष्टि से इसका उत्तर हाँ या न में हो सकता है। परन्तु सम्प्रेषण की दृष्टि से यह एक सामान्य प्रश्नवाचक वाक्य नहीं है। इस सन्दर्भ में इसका उत्तर केवल 'हाँ' या 'न' के द्वारा नहीं दिया जा सकता है। इस वाक्य में एक प्रार्थना छिपी है। आशय यह है कि रमेश ने सुरेश से जानकारी चाही है कि सोहन कौन है और वह क्या करता है? सुरेश यदि हाँ कहकर चुप हो जाता है और सोहन के विषय में कुछ जानकारी नहीं देता अथवा जानकारी देने की उत्सुकता नहीं दिखाता तो निश्चित ही यह कहा जा सकता है कि उसे भाषा का ज्ञान तो है, क्योंकि अपने प्रश्न का जबाब तो दिया। परन्तु भाषिक सम्प्रेषण की आवश्यकताओं की अभिपूर्ति नहीं कर पाता है अतः उसे 'भाषिक कला' का ज्ञान नहीं है। इसी परिस्थिति को एक अन्य उदाहरण द्वारा और भी

स्पष्ट किया जा सकता है जैसे रमेश और सुरेश परस्पर मिलते हैं। रमेश सुरेश से एक तीसरे व्यक्ति की ओर संकेत करके पूछता है कि 'क्या आप उनका नाम जानते हैं?' रमेश का यह वाक्य भी एक प्रश्नवाचक वाक्य है। परन्तु सम्प्रेषण की दृष्टि से इस वाक्य में भी सूचना पाने के लिए एक प्रार्थना छिपी है। इस वाक्य का अर्थ यह है कि सुरेश जो श्रोता है, उससे प्रार्थना की गई है कि वह रमेश को तीसरे व्यक्ति का नाम बताए। इसके उत्तर में यदि सुरेश ने केवल इतना कह दिया कि 'हाँ' पर नाम बताया नहीं तो यह समझा जाएगा कि भाषायी शब्दों का अर्थ तो उसे ज्ञात है परन्तु भाषिक कला का ज्ञान नहीं है। इस सन्दर्भ में विदेशी विश्वविद्यालय में हिन्दी पढ़ाए जाने के उद्देश्य को भी उद्धृत किया जा सकता है। भारतवर्ष की सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से विदेशों में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन किया जाता है। ये लोग ज्ञान की दृष्टि से तो हिन्दी सीख लेते हैं पर समाज के व्यावहारिक स्तर पर हिन्दी का उपयोग नहीं कर पाते हैं। उन्हें शब्द और उसके रूढ़ अर्थ का ज्ञान तो हो जाता है पर उस शब्द का सन्दर्भीय अर्थ क्या है? इसका ज्ञान इन्हें नहीं हो पाता। यह ज्ञान तो उन्हें तभी होगा जब उन्हें भाषिक कला की जानकारी होगी। जैसे - 'वह बड़ा गुरू है' वाक्य हिन्दी का कोई विदेशी अध्येता सुनेगा तो वह इसका अर्थ लेगा - 'He is a great teacher.' किन्तु वह बेचारा यह क्या जानेगा कि बड़ा और गुरू इन दोनों शब्दों के पीछे भयंकर व्यंग्य छिपा है। इन उदाहरणों के माध्यम से हमारा ध्यान इस बात पर केन्द्रित होता है कि किसी भाषा की भाषिक संरचना के ज्ञान के माध्यम से जहाँ हम उस भाषा की बाह्य संरचना से परिचित होते हैं वहीं उस भाषा में भाषिक कलाओं के प्रयोग और उनके महत्व से परिचित होने पर उस भाषा के माध्यम से सम्प्रेषित अर्थ के मर्म तक सहज ही पहुँच जाते हैं। 'भाषिक कला' को महत्व प्रदान करने के लिए एक तत्व और है जो भाषिक प्रयोग को बहुत ही प्राणवान बनाता है। वह है 'शिष्टता का सिद्धान्त'। यदि हम भाषिक कला में पारंगत हैं तो हम अपनी बात बड़ी शालीनता के साथ प्रस्तुत कर सकते हैं। हम अपनी बात भी कह लेंगे और श्रोता को उससे किसी भी प्रकार की अवमानना का बोध भी नहीं होगा।

भाषा के जरिए आग्रह भी किया जाता है। अपने स्कूल, कार्यस्थल और घर में हम एक दूसरे को सोचने, विश्वास करने, क्या करना है, क्या नहीं करना है आदि के लिए लगातार आग्रह करते रहते हैं। कभी हम अपने माता-पिता से सिनेमा जाने का आग्रह कर रहे होते हैं तो कभी अपने प्रोफेसर से फार्म भरने की अंतिम तिथि आगे बढ़ाने की अनुमति माँग रहे होते हैं। दुकानदार ग्राहक को प्रभावित करने की चेष्टा करता है और ग्राहक दुकानदार पर दबाव डालता है। सब भाषा का ही कमाल है। विज्ञापन में भाषा के जरिए ही ग्राहकों को उपभोक्ता वस्तुओं की ओर आकृष्ट किया जाता है।

भाषा मनोरंजन का प्रमुख साधन है। अगर भाषा न हो तो कल्पना कीजिए हमारे मनोरंजन के साधन कितने कम हो जाएंगे। सिनेमा देखना, गाना सुनना, मजाक करना, कविता-उपन्यास पढ़ना सब तो भाषा के माध्यम से ही तो होता है।

भाषा से हम दूसरों को दुखी भी कर सकते हैं और प्रभावित भी। यहाँ दो उदाहरणों द्वारा यह बात स्पष्ट की जा रही है।

पति-पत्नी किसी घनिष्ठ मित्र के घर मिलने जाएँ वहाँ बातचीत करते-करते बड़ी देर हो जाए। पति महोदय अपने उस परिचित से बात करने में इतने व्यस्त हों कि उन्हें इस बात का ध्यान भी न रहे कि घर पर बच्चे अकेले हैं और शाम हो रही है। पत्नी बार-बार बच्चों के बारे में सोचकर बेचैन हो पर पति महोदय का ध्यान ही उधर न जाए। पत्नी शालीनता से हाथ ही घड़ी देखकर धीरे से पति से कहती है कि 7 बज गए। पति को तुरन्त ध्यान आ जाता है और वह चलने की तैयारी कर लेता है। मित्र भी अपने मित्र की पत्नी द्वारा 7 बज गए हैं, कहने से बुरा नहीं मानता है वरन् वह भी अपनी सहमति व्यक्त करता है। यदि पत्नी इसी बात का कहती कि 'आपको तो गप लड़ाने से फुर्सत ही नहीं है बच्चे घर पर अकेले हैं चलिए बहुत देर हो गई।' तो यह बात सुनकर उसका पति और मित्र दोनों ही नाराज हो सकते थे। परन्तु पत्नी ने 'शिष्टता के सिद्धांत' का पालन करते हुए ऐसी कला पूर्ण शब्दावली का प्रयोग किया कि दोनों ही उससे सहमत हो गए। यह उदाहरण अथवा इस तरह के अनेक उदाहरण इस बात के पक्ष में दिए जा सकते हैं कि भाषिक कला के अन्तर्गत शिष्टता का सिद्धान्त बहुत ही महत्वपूर्ण और प्रभावकारी है।

उदाहरणार्थ - जैसे कोई बच्चा अपने दादा से बाजार से टॉफी मंगाए और वे बाजार से टॉफी लाना भूल जाएँ घर आने पर बच्चे के टॉफी मांगने पर वे सीधे-सीधे कहेंगे के 'अरे मैं तो टॉफी लाना भूल ही

गया' तो बच्चा दुखी होगा। शायद रोने भी लगे। यदि इसी को वे इस तरह कहें कि 'बेटे आज तो अच्छी टॉफी नहीं मिल रही थी, कल मैं बहुत ढेर सारी टॉफियाँ ला दूँगा।' बच्चा इस उत्तर को भी सुनकर हतोत्साहित तो होगा परन्तु कल आने वाली ढेर सारी टॉफियों की आशा में खुश हो जाएगा।

कई बार भाषा का इस्तेमाल आत्मसंतुष्टि के लिए भी किया जाता है। इसमें कई बार सम्प्रेषण की प्रक्रिया पूरी भी नहीं हो पाती है। सड़क पर स्कूटर, कार आदि चलाते वक्त अक्सर ऐसा होता है कि पीछे से आती गाड़ी गलत ढंग से हमारी गाड़ी के आगे निकलती है और हमें अचानक ब्रेक लगाना पड़ता है। हम या तो अचानक चिल्ला पड़ते हैं या गलत ढंग से गाड़ी निकालने के लिए उसपर गुस्सा करते हैं। वक्ता का संदेश श्रोता तक पहुँच ही नहीं पाता परन्तु इससे वक्ता को संतुष्टि हो जाती है। गुस्सा कर वह संतुष्ट हो जाता है। इस प्रकार कई बार सम्प्रेषण की प्रक्रिया पूरी न होने पर भी भाषा अपना काम कर जाती है।

भाषा छिपाने का भी काम करती है। झूठ का जन्म इसी से हुआ है। झूठ बोलना अर्थात सत्य को छिपाना गलत है। परन्तु भाषा की दृष्टि से यह भी कला है। हालाँकि झूठ हमेशा घातक होता भी नहीं है। उदाहरण के लिए किसी बच्चे को टॉफी लाने का वादा आपने कर लिया और आप टॉफी लाना भूल गए। यदि आप बच्चे से यह कह देंगे कि मैं टॉफी लाना भूल गया तो उसे दुख होगा और वह रोने लग सकता है। अतः आप यह कहकर उसे खुश कर देते हैं कि 'बेटा, आज सारी दुकानें बंद थीं। कल टॉफी जरूर ले आऊंगा।' इसी प्रकार किसी बच्चे की पेंटिंग या उसके द्वारा किए गए कार्य की प्रशंसा की जानी चाहिए। भाषा की सहायता से हम अपनी भावनाओं को छिपाने का भी प्रयत्न करते हैं।

बोध प्रश्न

1. भाषा के लिखित, मौखिक और आंगिक रूप से आप क्या समझते हैं? पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2. भाषा सूचना के आदान-प्रदान का सशक्त माध्यम है।' इस कथन पर विचार कीजिए। (दस पंक्तियों में उत्तर दीजिए।)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3. भाषा के जरिए दूसरे के विचारों को किस प्रकार प्रभावित किया जाता है? किसी विज्ञापन का उदाहरण देकर इसे स्पष्ट कीजिए। (दस पंक्तियों में उत्तर दीजिए।)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4. एक उदाहरण दीजिए जिसमें हम केवल अपनी संतुष्टि के लिए भाषा का इस्तेमाल करते हैं, चाहे कोई सुन रहा हो या न सुन रहा हो। (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।)

.....

.....

.....

.....

.....

5.5 भाषा का व्यावहारिक पक्ष

भाषिक कला के सन्दर्भ में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य उसका व्यावहारिक पक्ष है। जब हम भाषा के व्यावहारिक पक्ष की ओर ध्यान देते हैं तो उस समय भाषा व्यवहार के छः रूप हमारे सामने आते हैं -

1. भाषा का उपयोग कौन करता है?
2. भाषा का उपयोग किससे कर रहे हैं और उसकी स्थिति क्या है?
3. क्या कहा जा रहा है? विषय क्या है?
4. कहने का उद्देश्य क्या है?
5. कहने-सुनने वाले की स्थिति क्या है?
6. कहने-सुनने के लिए दोनों के पास कितना समय है?

5.5.1 वक्ता

भाषा के व्यवहार पक्ष में सबसे पहले यह बात आती है कि भाषा का प्रयोग कौन कर रहा है। भाषा का रूप-रंग, आकार-प्रकार बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि उसका उपयोग किसके द्वारा किया जा रहा है। अर्थात भाषा का प्रयोक्ता जैसा होगा उसी के अनुरूप भाषा भी होगी। इसे कुछ इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्रयोक्ता की मानसिक स्थिति जैसी होगी वह तदनुरूप भाषा का प्रयोग करेगा। भाषा का यह प्रयोग किसी भी माध्यम से हो सकता है टेलीविज़न, रेडियो के लिए, पत्र-पत्रिकाओं के लेखन अथवा समान्य बोल-चाल के रूप में।

5.5.2 श्रोता

भाषा के व्यवहार पक्ष में दूसरी बात आती है कि भाषा का उपयोग किससे किया जा रहा है और उसकी स्थिति क्या है? कई बार वक्ता अपनी भाषा में श्रोता की विभिन्न स्थितियों के आधार पर भाषा

का प्रयोग करता है अर्थात श्रोता की उम्र, जाति, धर्म आदि के आधार पर भाषिक प्रयोग करता है। श्रोता यदि उम्र में वक्ता से छोटा है तो वह कहेगा - "तुम मेरे साथ चल सकते हो" यदि श्रोता वक्ता से उम्र में बड़ा है तो वह कहेगा - "आप मेरे साथ चलें तो अच्छा हो"।

5.5.3 कथन

भाषा के व्यवहार पक्ष में तीसरी महत्वपूर्ण बात आती है कि क्या कहा जा रहा है। अर्थात बात-चीत का विषय क्या है? विषय जैसा होगा वैसी ही भाषा का प्रयोग किया जाएगा। यदि गूढ़ विषय है तो निश्चित ही हल्की-फुल्की भाषा का प्रयोग नहीं किया जाएगा। यदि विषय राजनीति से संबंधित है तो राजनीति से युक्त शब्दावली का प्रयोग किया जाए। अर्थात जैसा विषय वैसी ही भाषा। इस संदर्भ में ध्यान देने की बात यह है कि विषय जैसे-जैसे बदलेगा, बात भी बदलेगी और जब विषय बदलेगा, बात बदलेगी तो निश्चित ही भाषा प्रयोग भी बदलेगा। गूढ़ वार्ता के क्रम में यदि कहीं हल्की-फुल्की बात अथवा हास्य आदि सन्दर्भों की बात होगी तो गूढ़-गुम्फित शब्दावली के बीच में हल्के स्तर की शब्दावली अथवा हास्य की शब्दावली का प्रयोग होगा। भाषा के प्रयोग की दृष्टि से यह विशिष्ट प्रयोग है।

5.5.4 उद्देश्य

भाषा के व्यवहार के सन्दर्भ में चौथी महत्वपूर्ण बात आती है कि बात कहने का उद्देश्य क्या है? अर्थात वक्ता-श्रोता के मध्य जो वार्ता हो रही है उसका उद्देश्य गप-शप करना अथवा समय बिताना है या कुछ गूढ़ और महत्वपूर्ण तत्व है अथवा वक्ता श्रोता पर अपना प्रभाव जमाने के लिए बात कर रहा है। यदि वक्ता श्रोता में सामान्य गपशप अथवा समय बिताने के लिए वार्ता हो रही है तो उनके मध्य भाषा का जो रूप व्यवहृत होगा वह बहुत ही सामान्य होगा। उसकी शब्दावली हल्की और हास्य आदि से युक्त हो सकती है। कभी वे मौसम के विषय में बातें करेंगे, कभी देश और राजनीति और कभी कुछ, कभी कुछ। इस सारे संदर्भों में वे बेहिचक बोलते रहेंगे। उदाहरणार्थ - ट्रेन में दो व्यक्ति आमने-सामने अथवा अगल-बगल बैठे हैं। अथवा एक पहले से बैठा है और दूसरा उसके पास आकर बैठ जाता है। दोनों में कोई परिचय नहीं है। थोड़ी देर तक चुप बैठने के बाद उनमें से एक कहता है "आज बड़ी गर्मी है।" सामने वाला व्यक्ति इस बात पर निश्चित ही अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करेगा और यदि नहीं भी करता तो पहले वाला व्यक्ति वार्ता शुरू करने, कोई उद्देश्य से बात को फिर एक नया मोड़ देकर कहेगा कि "कारगिल में गजब ही हो गया।" बस इसी तरह दोनों में वार्ता का प्रारंभ हो जाती है और थोड़ी देर बाद बात जाने कहाँ से कहाँ पहुँच जाती है और वे दोनों ही नहीं बल्कि आस-पास बैठे और लोग भी बातों में शरीक हो जाते हैं और बात राजनीति, संस्कृति, अर्थ जगत, देश में व्याप्त दुर्व्यवस्था, धर्म आदि विषयों को अपनी चर्चा का केन्द्र बनाती हुई कहाँ से कहाँ पहुँच जाएगी। इसी बीच जिसका गन्तव्य स्टेशन आता जाएगा वह उतरता जाएगा और नए लोग आकर उस चर्चा में शरीक होते जाएँगे। यदि वक्ता-श्रोता के बीच कुछ गूढ़ बातें हो रही हैं तो उसकी शब्दावली अलग होगी। न केवल शब्दावली वरन् उस समय उनके बीच आंगिक भाषा भी उतनी ही रहस्यमयी हो जाएगी। आंगिक भाषा और मौखिक भाषा दोनों मिलकर वक्ता-श्रोता के बीच गंभीर वार्ता की सृष्टि कर देते हैं। यदि वक्ता-श्रोता पर अपना प्रभाव जमाने की दृष्टि से बात करता है तो वह भाषा के भारी भरकम रूप का प्रयोग करके श्रोता पर अपना प्रभाव जमाने का प्रयत्न करेगा। ऐसे सन्दर्भों में वक्ता अपने को बड़े महत्वपूर्ण रूप में प्रस्तुत करना चाहता है और वह तद्नुकूल भाषा का व्यवहार करता है।

5.5.5 स्थिति

भाषा के व्यवहार के संदर्भ में पाँचवी महत्वपूर्ण बात यह है कि बात कहने-सुनने वाले की स्थिति क्या है? अर्थात वक्ता और श्रोता की स्थिति पर भी संभाषण के दौरान प्रयोग की जाने वाली भाषा का प्रयोग निर्भर करता है। वक्ता और श्रोता की स्थिति का निर्धारण स्थितियों पर होता है -

1. सामाजिक स्थिति
2. सांस्कृतिक और शैक्षिक स्थिति
3. मानसिक स्थिति

1. सामाजिक स्थिति : भाषा के प्रयोग करने वाले की सोच, उसके सामाजिक संबंधों तथा उसके सामाजिक परिवेश को उद्घाटित करने में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। भाषा का समाज सन्दर्भित अध्ययन भाषिक कला के लिए बहुत ही उपयोगी और महत्वपूर्ण होता है। समाज के अलग-अलग स्तरों (उच्च, मध्य और निम्न) के अनुसार भाषा प्रयोक्ता भी सम्प्रेषण के लिए अलग-अलग प्रकार से भाषिक शब्दावली का प्रयोग करेंगे। एक ही शब्द का उच्चारण अलग-अलग रूप में

करेंगे जैसे - पैसा-पइसा, कैसा-कइसा, इक्कीस-इकइस आदि। इसी प्रकार तुरई-तोरी, कद्दू-कोहड़ा भी लिए जा सकते हैं।

2. सांस्कृतिक और शैक्षिक स्थिति : सांस्कृतिक और शैक्षिक स्थितियों के आधार पर भी भाषिक कला के अलग-अलग रूप दृष्टिगत होते हैं। सुसंस्कृत लोग जिस शब्दावली का प्रयोग करेंगे, अर्द्धशिक्षित अथवा अशिक्षित लोग उस शब्दावली का प्रयोग नहीं करेंगे। सुसंस्कृत और सुशिक्षित लोग अंग्रेजी लिखे-पढ़े लोग टॉफी, कॉफी, डॉक्टर, बॉल, कॉलेज आदि रूपों में शब्दों का उच्चारण करेंगे जबकि सांस्कृतिक दृष्टि से पिछड़े और अर्द्धशिक्षित अथवा अशिक्षित लोग - टाफी, कफी, डाग्डर, बाल, कालेज/कालिज आदि शब्द रूपों का व्यवहार करते हैं। वक्ता की शिक्षा जन्म और संस्कार के कारण भाषा व्यवहार दो रूपों में मिलता है। 1. सामान्य, 2. विशिष्ट - इन दोनों के अतिरिक्त एक रूप और मिलता है - अशिष्ट।

3. मानसिक स्थिति : मानसिक स्थिति भी भाषिक कला के लिए काफी हद तक उत्तरदायी होती है। यदि वक्ता-श्रोता की मानसिक स्थिति ठीक है तो वे अच्छी भाषा और भाषा के अच्छे रूप का प्रयोग करेंगे और यदि उनकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं है तो कैसी भाषा का प्रयोग वे करेंगे, इसका कोई भरोसा नहीं रहता है। ऐसी मान्यता है कि सत्साहित्य की रचना अच्छी मन:स्थिति में ही सम्भव होती है। कवि अथवा साहित्यकार का मन प्रसन्न है तो भाषा भी प्रसंगानुकूल, माधुर्यमय, ओजमय प्रयुक्त होगी। यदि कवि के हृदय में किसी प्रकार का अवसाद है तो भाषा भी अवसादमयी ही होगी। इसी प्रकार सम्प्रेषण के क्षेत्र में वक्ता-श्रोता की मानसिक स्थिति पर भाषा का स्वरूप निर्भर करता है। यदि उसे केवल समय बिताना है तो हल्की-फुल्की बातें ही करेगा जैसे रेलगाड़ी के यात्री आपस में वार्ता करते हैं। यदि वे धार्मिक मानसिकता के हैं तो उनकी वार्ता में धर्म और दर्शन की शब्दावली का प्रयोग होगा। मानसिक स्थिति के सन्दर्भ में परिवेश और सामयिक पृष्ठभूमि के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। परिवेश और पृष्ठभूमि जैसी होगी भाषा प्रयोक्ता की मानसिक भी वैसी ही होगी। उदाहरण के लिए यदि वक्ता प्रेममय परिस्थितियों में जी रहा है तो उसकी वाणी भी प्रेम और उल्लास से सराबोर होगी। जैसे कोई युवा प्रसन्नता की स्थिति में अपनी चाल से उत्साह प्रकट करता हुआ बात-बात में अपने मित्रों से लिपटना-चिपटना या उछलने कूदने लगता है तथा उसके बात उसकी वार्ता की शैली भी उत्साहमय हो जाती है। शब्दों के माध्यम से अतिशय भावातिरेक की अभिव्यक्ति हेतु वह शब्दों के रूप कुछ तोड़-मरोड़ कर प्रयोग करने लगता है।

5.5.6 समय

भाषा व्यवहार के सन्दर्भ में छठवीं महत्वपूर्ण बात यह है कि कोई बात जब कही जा रही है उस समय कहने सुनने वाले के पास कितना समय है। वक्ता के पास जितना समय होगा उतने के अनुसार ही वह अपनी बात को रखेगा और इस सन्दर्भ में उसे श्रोता के समय का भी ध्यान रखना पड़ेगा। यदि श्रोता के पास समय नहीं है अथवा कम समय है तो वह वक्ता की बात ध्यानपूर्वक नहीं सुनेगा अतः वक्ता को चाहिए कि वह श्रोता की समय सीमा का सही-सही अन्दाज लगाकर उतने समय में ही अपनी बात कह दे। वक्ता को श्रोता के ही नहीं वरन् अपने समय का भी पूरा-पूरा ध्यान रखना पड़ेगा। समय सीमा का ध्यान रखे बिना वक्ता जब अपनी बात शुरू करेगा - लम्बी-चौड़ी भूमिका के साथ तो बीच में घड़ी देखकर उसे अपनी बात बीच में ही छोड़नी पड़ेगी अथवा अपने कथ्य को हड़बड़ाहट में जल्दी-जल्दी खतम करना पड़ेगा और ऐसी स्थिति में वह जो भी कहना चाहता है उसका सम्प्रेषण पूरी तरह नहीं हो पाएगा और पूरा हो भी जाएगा तो वक्ता को अपने भावों/मन्तव्यों को पूरी तरह सम्प्रेषित करने में सफलता नहीं मिल पाएगी और श्रोता यह सोचने को बाध्य होगा कि वक्ता ने पता नहीं क्या कहा अथवा वह पता नहीं क्या कहना चाहता था।

बोध प्रश्न

5. आपको पुस्तक खरीदने के लिए पैसे चाहिए। आप अपने पिता से किस प्रकार इसका आग्रह करेंगे। संवाद के रूप में इसे लिखिए। (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।)

.....

.....

.....

.....

.....

6. अपने घर में होने वाली सामान्य बातचीत सुनिए और नोट कीजिए कि उसमें कौन-कौन से विषयों पर बात की गई। (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।)

.....

.....

.....

.....

.....

7. संक्षेप में अपनी बात को कहने का क्या महत्व है? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।)

.....

.....

.....

.....

.....

5.6 सारांश

इस इकाई में आपने भाषिक कला के विभिन्न पक्षों का अध्ययन किया। भाषा सम्प्रेषण का सशक्त माध्यम है। प्रयोग के स्तर पर सम्प्रेषण के तीन रूप हमारे सामने आते हैं - लिखित, मौखिक और आंगिक। लिखित भाषा में व्याकरण का बंधन होता है और इसमें प्रायः भाषा के मानकीकृत रूप का इस्तेमाल किया जाता है। मौखिक भाषा थोड़ी बहुत इन बंधनों से मुक्त होती है। इसमें क्षेत्रीय प्रभाव भी रहता है और लोग बोलते समय व्याकरण से बंधकर नहीं रहते। आंगिक सम्प्रेषण में भाषा मूक रहती है और अंगों के संचालन तथा भावाभिव्यक्ति द्वारा सम्प्रेषण होता है। यह सम्प्रेषण भी काफी प्रभाव डालता है। हालाँकि इसमें भाषा अपने मुखर रूप में नहीं बल्कि मौन रूप में कार्य करती है। भाषा अनेक कार्य करता है। सूचना, आग्रह, मनोरंजन, संबंध-विच्छेद, पूरक, बात को छिपाना आदि अनेक ऐसे क्षेत्र में जिसमें भाषा अलग-अलग ढंग से काम करती है। भाषा का प्रयोग इस बात पर भी निर्भर करता है कि भाषा का उपयोग किसके समक्ष (श्रोता) किया जा रहा है और उसकी स्थिति क्या है, विषय क्या है, उद्देश्य क्या है आदि। इन सब पक्षों को ध्यान में रखकर ही भाषा का सार्थक उपयोग संभव है।

5.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. भाषा सम्प्रेषण का प्रमुख माध्यम है। यह सम्प्रेषण तीन तरीकों से होता है - लिखित, मौखिक और आंगिक। लिखित भाषा व्याकरण सम्मत होती है। इसके तीन गुण होते हैं - प्रसाद, ओज और माधुर्य। भाषा के उच्चरित रूप को मौखिक भाषा कहते हैं। इसमें व्याकरण का बंधन जटिल नहीं होता बल्कि बोलते समय वक्ता काफी छूट ले लेता है। आंगिक भाषा में शब्द के स्थान पर आंगिक भाव भंगिमा का उपयोग किया जाता है।

2. भाषा सूचना के आदान-प्रदान का सशक्त माध्यम है। भाषा के माध्यम से ही हम प्रतिदिन और हर क्षण अपने अनुभवों, संवेदनाओं, विश्वासों, मूल्यों आदि के बारे में एक दूसरे को सूचित करते हैं। देखिए भाग 5.4.

3. आपने मारुति का एक विज्ञापन देखा होगा जिसमें पुत्र अपने माता-पिता को स्टेशन लेने जाता है। माता-पिता अपने पुत्र की नई मारुति देखकर अति प्रसन्न होते हैं। मारुति आगे बढ़ती है और बस स्टॉप पर खड़ा एक व्यक्ति और उसका बेटा मारुति को हसरत भरी निगाहों से देखते हैं। इस विज्ञापन में बार-बार यही दोहराया जाता है 'मारुति मेरा सपना'। यह

विज्ञापन दृश्य और श्रव्य भाषा के जरिए हमें यह सोचने को मजबूर करता है कि मारुति हमारा भी सपना है। इस प्रकार हम सबके मन में एक चाहत जगती है - मारुति लेने की।

4. आप सुबह सैर करने जाएँ। आपको कई लोग ऐसे मिल जाएँगे जिनके होंठ हिल रहे होंगे। ऐसा लगेगा कि वे अपने आपसे बात कर रहे हौ। व्यक्ति अपने आप से बात करते वक्त भी भाषा का ही इस्तेमाल करता है।

5. पुत्र - पिताजी मुझे कुछ पैसे चाहिए।
पिता - बेटे, किस काम के लिए तुम्हें पैसे चाहिए।
पुत्र - पिताजी मुझे प्रेमचंद का एक उपन्यास खरीदना है।
पिता - क्या यह पुस्तक पुस्तकालय में उपलब्ध नहीं है?
पुत्र - यह पुस्तक हमारे पाठ्यक्रम में शामिल है। इसलिए निजी प्रति मेरे पास होनी चाहिए।
पिता - अच्छा, लो पैसे लो।
पुत्र - धन्यवाद, पिताजी।

6. घरेलू बातचीत में बच्चों की पढ़ाई, रिश्तेदारों, राजनीति आदि किसी भी विषय पर चर्चा हो सकती है। आप इसे अपने अनुभव के आधार पर लिखिए।

7. भाषा का इस्तेमाल सोच समझकर किया जाना चाहिए। संक्षेप में कही बात का श्रोता पर सटीक प्रभाव पड़ता है। अपने व्यावहारिक जीवन में भी आपने महसूस किया होगा कि जो ज्यादा बोलते हैं उनकी बात का वजन नहीं होता। जो सोच समझकर और जरूरत के मुताबिक बोलते हैं लोग उनकी बात ध्यान से सुनते हैं और उन्हें महत्व भी देते हैं।